National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2017; 1(15): 122-124
© 2017 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

व्यवस्थित समाज का आधार : वैदिक संस्कृति

डॉ सुरेश कुमार

वैदिक संस्कृति भारतीय सभ्यता की प्राचीनतम और सबसे समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा है। यह केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन, सामाजिक व्यवस्था, नैतिक मूल्यों, शिक्षा प्रणाली, आर्थिक संगठन और राजनीतिक विचारधारा का समग्र आधार है। वैदिक साहित्य में वर्णित ऋत, धर्म, सत्य, कर्म, यज्ञ, सह-अस्तित्व, समता और लोककल्याण जैसे सिद्धांतों ने समाज को सुव्यवस्थित, संतुलित और नैतिक रूप प्रदान किया। इस शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि किस प्रकार वैदिक संस्कृति ने सामाजिक संगठन, पारिवारिक व्यवस्था, शिक्षा, राजनीति, अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय चेतना को दिशा देकर एक व्यवस्थित समाज की नींव रखी।

1. भूमिका

मानव समाज का विकास केवल भौतिक संसाधनों से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों से होता है। किसी भी सभ्यता की स्थिरता उसके सांस्कृतिक आधार पर निर्भर करती है। भारतीय समाज की संरचना का मूल आधार वैदिक संस्कृति रही है।

वैदिक संस्कृति ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में निहित विचारों से विकसित हुई। इन ग्रंथों में मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—का संतुलित विवेचन मिलता है। वैदिक संस्कृति ने समाज को केवल नियमों से नहीं, बल्कि कर्तव्य, नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना से संगठित किया।

इस शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि वैदिक संस्कृति किस प्रकार एक व्यवस्थित समाज की आधारशिला है और आज के आधुनिक समाज के लिए भी इसकी प्रासंगिकता क्यों बनी हुई है।

2. वैदिक संस्कृति का अर्थ और स्वरूप

2.1 संस्कृति की अवधारणा

संस्कृति का अर्थ है—संस्कारों द्वारा परिष्कृत जीवन पद्धति। वैदिक संस्कृति वह जीवन-दृष्टि है जो वेदों से उद्भूत हुई। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक विकास की प्रक्रिया है।

2.2 वेदों का परिचय

वेद चार हैं:

1. ऋग्वेद – देवताओं की स्तुति और प्राकृतिक शक्तियों का वर्णन
2. यजुर्वेद – यज्ञ और कर्मकांड का विवेचन
3. सामवेद – संगीत और सामगान
4. अथर्ववेद – सामाजिक जीवन, चिकित्सा और व्यवहारिक ज्ञान

ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र:

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥[1]

अर्थ: ज्ञानी लोग एक ही परम सत्य को विभिन्न नामों से पुकारते हैं— कोई उसे इंद्र कहता है, कोई मित्र, कोई वरुण, कोई अग्नि, कोई यम, तो कोई मातरिश्वा। अर्थात् सत्य एक है, परंतु उसकी अभिव्यक्ति अनेक रूपों में होती है।

3. वैदिक संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था

3.1 ऋत और धर्म की अवधारणा

वैदिक समाज का आधार 'ऋत' था, जो ब्रह्मांडीय और सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक है। ऋत से ही धर्म की अवधारणा विकसित हुई। ऋग्वेद में कहा गया है:

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥[2]

अर्थ: तपस्या (तप) से ऋत (नियम, व्यवस्था) और सत्य की उत्पत्ति हुई।

उसके बाद रात्रि उत्पन्न हुई और फिर महासागर (जल) का जन्म हुआ।

3.2 वर्ण व्यवस्था

वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था का उद्देश्य कार्य-विभाजन था, न कि सामाजिक भेदभाव।

पुरुषसूक्त में वर्णों का उल्लेख:

"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥[3]"

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् – ब्राह्मण मुख से उत्पन्न हुआ; ज्ञान और धर्म के रक्षक।

- **बाहू राजन्यः कृतः** – क्षत्रिय बाहू से उत्पन्न हुआ; शक्ति और राज्य की रक्षा हेतु।
- **ऊरू तदस्य यद्वैश्यः** – वैश्य ऊरू से उत्पन्न हुआ; व्यापार, कृषि और संपत्ति के लिए।
- **पद्भ्यां शूद्रो अजायत** – शूद्र पदों से उत्पन्न हुआ; सेवा और श्रम के लिए।

यह मंत्र वैदिक समाज में चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की उत्पत्ति और उनके कर्तव्यों को दर्शाता है।

3.3 आश्रम व्यवस्था

वैदिक संस्कृति में जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया गया:

1. ब्रह्मचर्य
2. गृहस्थ
3. वानप्रस्थ
4. संन्यास

यह व्यवस्था व्यक्ति और समाज के संतुलित विकास की योजना है।

4. वैदिक संस्कृति और नैतिक मूल्य

4.3 करुणा, दया और लोककल्याण

वैदिक संस्कृति में करुणा और लोकहित को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

स्वस्ति नः पन्थामनु चराम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्दत्ता नः पतयो वाजिनो देवनो नरः॥[4]

अर्थ: हम सूर्य और चंद्रमा के समान शुभ मार्ग पर चलें। देव और वीर पुरुष हमें पुनः शक्ति और संरक्षण प्रदान करें। यह मंत्र समाज के कल्याणकारी मार्ग की प्रेरणा देता है।

शं नो मित्रः शं वरुणः।
शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।
शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥[5]

अर्थ: मित्र हमारे लिए मंगलकारी हों, वरुण हमारे लिए मंगलकारी हों, अर्यमा, इंद्र, बृहस्पति और विष्णु भी हमारे लिए कल्याणकारी हों। यह मंत्र सामाजिक सौहार्द और शांति का प्रतीक है।

4. वैदिक संस्कृति और नैतिक मूल्य

4.1 सत्य और अहिंसा

वैदिक संस्कृति में सत्य सर्वोच्च मूल्य है।

सत्यं वद। धर्मं चर।
स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।[6]

अर्थ: सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो।स्वाध्याय (स्वयं अध्ययन) से प्रमाद मत करो।

गुरु को प्रिय धन देकर, वंश परंपरा को विच्छिन्न मत होने दो।अहिंसा की भावना भी वैदिक परंपरा में निहित है:

" मा हिंस्यात् सर्वा भूतानि।
मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।[7]

अर्थ: कोई भी प्राणी हिंसा का शिकार न हो। सभी प्राणियों को मित्रभाव से देखा जाए।

4.2 सह-अस्तित्व और समता

ऋग्वेद में सामूहिक जीवन का संदेश:

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥[8]

अर्थ: साथ चलो, साथ बोलो, और तुम्हारे मन एक हों। जिस प्रकार पूर्वकाल में देवता एकमत होकर कार्य करते थे, उसी प्रकार तुम भी एकता से कार्य करो।यह मंत्र सामाजिक एकता का आधार है।

5. वैदिक संस्कृति और शिक्षा प्रणाली

5.1 गुरु-शिष्य परंपरा

वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ज्ञान केवल पुस्तकीय नहीं, बल्कि अनुभवजन्य था।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ स्वाम्॥[9] "

आत्मा केवल भाषण, बुद्धि या अधिक अध्ययन से नहीं, बल्कि आंतरिक साधना से प्राप्त होती है।

5. वैदिक संस्कृति और शिक्षा प्रणाली

वैदिक शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण था। गुरुकुल प्रणाली में शिष्य को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित किया जाता था।

उपनिषदों में शिक्षा का उद्देश्य:

" अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः॥
अन्यदेवाहुर्विद्यया अन्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे॥
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतमश्नुते॥[10]

अर्थ : जो व्यक्ति विद्या और अविद्या दोनों को जानता है,वह अविद्या से मृत्यु को पार करता है
और विद्या से अमरत्व प्राप्त करता है।

6. वैदिक संस्कृति और राजनीतिक विचार

वैदिक समाज में राजा को धर्म का रक्षक माना गया। राजा का कर्तव्य था कि वह न्याय, सुरक्षा और लोककल्याण सुनिश्चित करे।

अथर्ववेद में राजा के कर्तव्य:

"राजा राष्ट्रस्य अधिपतिः।[11]"

तुम राष्ट्र के स्वामी (रक्षक/पालक) हो। राजनीति का उद्देश्य शक्ति नहीं, बल्कि धर्म और न्याय था।

7. वैदिक संस्कृति और आर्थिक व्यवस्था

वैदिक अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन और व्यापार पर आधारित थी। समाज में दान, यज्ञ और सहयोग की परंपरा थी।

ऋग्वेद में दान का महत्व:

" दातारा इन्द्रं पिबन्तु।
यो नो दाता स नो ददातु।[12]

अर्थ: दान देने वाले यजमान (श्रेष्ठ बुद्धि वाले लोग) इंद्र का पूजन करते हैं।

8. वैदिक संस्कृति और पर्यावरण चेतना

8.1 प्रकृति और मानव का संबंध

वैदिक संस्कृति में मानव और प्रकृति के बीच गहरा संबंध स्थापित किया गया है।

" आपो हि ष्ठा मयोभुवः।
अपः सदन्तु विश्वे देवाः।
आपो नः प्रथयन्तु सुखमायुं च।[13]

अर्थ: जल जीवन का मूल है। देवता सबको जल प्रदान करें। जल से जीवन सुखमय और आयुष्मान बने।

8.2 विश्व-शांति का संदेश

" शं नो मित्रः शं वरुणः।
शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।
शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥[14] "

अर्थ: मित्र, वरुण, अर्यमा, इंद्र, बृहस्पति और विष्णु हमारे लिए कल्याणकारी हों। यह सामाजिक शांति, सहयोग और सौहार्द का मंत्र है। यह वैदिक संस्कृति का वैश्विक मानवतावादी दृष्टिकोण है।

8. वैदिक संस्कृति और पर्यावरण चेतना

वैदिक संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में देखा गया। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को देवतुल्य माना गया।

अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त:

" माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
भूमौ सदा स्वर्गवासी भूत्वा सुखं यास्यामि।[15] "

हमें पृथ्वी का सम्मान करना चाहिए, उसका शोषण नहीं। यह मंत्र पर्यावरण संरक्षण का मूल सिद्धांत है।

9. आधुनिक समाज में वैदिक संस्कृति की प्रासंगिकता

आज का समाज भौतिक प्रगति के बावजूद नैतिक संकट से गुजर रहा है। वैदिक संस्कृति के सिद्धांत—सत्य, धर्म, सहिष्णुता, कर्तव्य और लोककल्याण—आज भी समाज को दिशा दे सकते हैं।

वैदिक संस्कृति वैश्विक स्तर पर मानवता, शांति और सह-अस्तित्व का संदेश देती है।

10. निष्कर्ष

इस शोध से स्पष्ट होता है कि वैदिक संस्कृति केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक समग्र सामाजिक दर्शन है। इसने समाज को नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से सुव्यवस्थित किया।

व्यवस्थित समाज के निर्माण के लिए वैदिक संस्कृति के मूल सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन काल में थे। यदि आधुनिक समाज वैदिक मूल्यों को अपनाए, तो सामाजिक संघर्ष, नैतिक पतन और पर्यावरण संकट जैसी समस्याओं का समाधान संभव है।

संदर्भ-सूची –

1. ऋग्वेद 1.164.46
2. ऋग्वेद 10.190.1
3. ऋग्वेद 10.90.12– 13
4. ऋग्वेद 5.51.15
5. यजुर्वेद 36.17
6. तैत्तिरीय उपनिषद् 1.11
7. यजुर्वेद 36.18
8. ऋग्वेद 10.191.2
9. कठोपनिषद् 1.2.23
10. ईशोपनिषद् मंत्र 9-11
11. अथर्ववेद 3.4.1
12. ऋग्वेद 8.46.13
13. ऋग्वेद 10.9.1
14. ऋग्वेद 1.89.3
15. ऋग्वेद 1.90.3